विचार बिन्दु

जब जिन्दगी को अपने दिल के गीत सुनाने का मौका नहीं मिलता, तब वह अपने मन के विचार सुनाने के लिए दार्शनिक पैदा कर देती है।

–खलील जिब्रान

आयुर्वेद के रसायन मानवता के लिये वरदान हैं

आज की चर्चा एक बार पुन: आयुर्वेद के रसायनों पर है। जैसा कि पहले चर्चा की जा चुकी है, जीवन में एक ऐसा समय आता है जब कितना ही बुद्धिमान डॉक्टर हो या कितनी ही बढ़िया चिकित्सा हो, रोग ठीक करना मुश्किल हो जाता है। यदि व्यक्ति का बल और मांस क्षीण हो जाये तो ऐसा भान होने लगता है जैसे आयु पूरी हो चुकी है। कोई महाव्याधि अचानक निवर्तित हो जाये व भोजन से मिलने वाले लाभ मिलना भी बंद हो जायें तो भी यही स्थिति बनती है (देखें, सु.सू.32.7-8): चिकित्स्यमान: सम्यक च विकारो योऽभिवर्धते। प्रक्षीणबलमांसस्य लक्षणं तद्गतायुष:।। निवर्तते महाव्याधि: सहसा यस्य देहिन:। न चाहारफलं यस्य दृश्यते स विनश्यति।। जानी-मानी व बहुत लोगों पर सफल और बढ़िया तैयार औषधि भी यदि किसी व्यक्ति में वांछित प्रभाव ना दे पा रही हो तो व्यक्ति को गैर-उपचार योग्य श्रेणी में माना जाता है। चिकित्सक की सलाह से तैयार कर दिये गये भोजन का वांछित परिणाम नहीं मिल रहा हो, तो चिंताजनक स्थिति मानी जाती है (देखें, च.इ.12.7-8): विज्ञातं बहुश: सिद्धं विधिवच्चावचारितम्। न सिध्यत्योषधं यस्य नास्ति तस्य चिकित्सितम्।। आहारमुपयुञ्जानो भिषजा सूपकल्पितम्। य: फलं तस्य नाप्नोति दुर्लभं तस्य जीवितम्।। बात यहाँ अति-कठिन परिस्थिति की है।

वस्तुत: आयुर्वेद के दृष्टिकोण से माना जाता है कि जब मृत्यु का समय निकट आता है तो कुछ अरिष्ट प्रकट होते हैं (देखें, च.इ.2.5): न त्वरिष्टस्य जातस्य नाशोऽस्ति मरणादृते। मरणं चापि तन्नास्ति यन्नारिष्टपुर:सरम्।। किन्तु माना यह भी जाता है कि अरिष्ट को निर्विवाद रूप से पहचानने में त्रुटि भी हो सकती है (देखें, च.इ.2.6): मिथ्यादृष्टमरिष्टाभमनरिष्टमजानता। अरिष्टं वाऽप्यसम्बुद्धमेतत् प्रज्ञापराधजम्।। कहने का तात्पर्य यह है कि हो सकता है वास्तव में अरिष्ट प्रकट ना हुआ हो, फिर भी त्रुटिवश प्रकट हुआ मान लिया जाये।

अत: यदि भ्रम की स्थिति हो तो चिकित्सा की जाये या नहीं? यदि हाँ, तो कैसी चिकित्सा उपयुक्त हो सकती है? मेरे विचार से अरिष्ट की सही या गलत पहचान के पचड़े से बाहर निकल कर चिकित्सा करना ही उचित है। ऐसे अनेक लोग हैं जिन्हें अंतिम स्थिति में पहुंचा हुआ मानकर धरती पर लिटाकर तुलसी और गंगाजल खिला-पिला दिया गया। गाय की बछिया की पूँछ पकड़ा कर दान-पुण्य भी करा दिया गया। पर वे फिर उठ खड़े हुये और कई साल चले। इसलिये जब तक प्राण हैं, चिकित्सा करना उपयोगी है।

अब प्रश्न यह है कि ऐसी कौन सी चिकित्सा है जो अरिष्ट निवारण में सक्षम हो सकती है? वैसे तो अरिष्ट-निवारण की सामर्थ्य कम ही व्यक्तियों में होती है, तथापि यह असंभव नहीं है। अरिष्ट प्रकट होने के बाद भी युक्ति-व्यपाश्रय, सत्त्वावजय और दैव-व्यपाश्रय की त्रिवेणी में की गयी चिकित्सा मृत्यु को टाल सकती है। इसका संकेत वैज्ञानिक-महर्षि आचार्य सुश्रुत ने दिया है। रिष्ट उत्पन्न होने पर मृत्यु निश्चित है, तथापि मानस दोषों से मुक्त विद्वान के द्वारा या रसायन, तप, और जप में पारंगत व्यक्ति द्वारा मृत्यु का निवारण किया जा सकता है (देखें, सु.सू.28.5): ध्रुवन्तु मरणं रिष्टे ब्राह्मणैस्तत् किलामलै:। रसायनतपोजप्यतत्परैर्वा निवार्य्यते।। कठिन रोगों की स्थिति में भी बचने की संभावना यहाँ साफ़ दृष्टिगोचर है।

क्या वास्तव में रसायन इतने उपयोगी और प्रभावी हैं? संहिताओं, शोध और अनुभव तीनों में ही इस प्रश्न का उत्तर धनात्मक ही मिलता है। आइये पहले संहिताओं के वे प्रमाण देखते हैं जो केवल कठिन रोगों व परिस्थितियों के सन्दर्भ में हैं। पहला प्रमाण आचार्य सुश्रुत के उस कथन से मिलता है जिसमें रोगों की सूची देते हुये संकेत किया गया है कि ये रोग रसायन के बिना असाध्य हो जाते हैं (देखें, सु.सू.33.3): ये जुष्टा व्याधयो यान्त्यवार्यताम्। रसायनाद्विना वत्स तान् शृण्वेकमना मम।। इस संदर्भ से यह संकेत तो स्पष्ट है ही कि रसायन से रोगों को उन अवस्थाओं में जाने से रोका जा सकता है जहां वे चिकित्सा की दृष्टि से असाध्य हो जाते हैं। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि रसायन असाध्य रोगों को भी साध्य बनाते हुये चिकित्सा में मददगार हो सकते हैं। उदाहरण के लिये, हालाँकि कुष्ठ और प्रमेह असाध्य होते हैं, पर आचार्य सुश्रुत ने स्वयं एक ऐसा योग दिया है जो असाध्य कुष्ठ और प्रमेह को भी ठीक कर देता है (सु.चि. 10.12): एषौषधायस्कृतिरसाध्यं कुष्ठं प्रमेहं वा साधयति। वस्तुत: यह उस सिद्धान्त की विजय है जिसमें आचार्य चरक ने चिकित्सा की सफलता में युक्ति को सर्वोपरि माना है। यहाँ निहितार्थ यह है कि यदि रसायन चिकित्सा की जाये तो ये रोग असाध्य नहीं हो पाते। आधुनिक वैज्ञानिक शोध में रसायन उसी प्रकार उपयोगी पाये गये हैं जैसा कि आचार्य सुश्रुत ने निर्दिष्ट किया है। दूसरा प्रमाण, चरकसंहिता की टीका में चक्रपाणि द्वारा महर्षि अगस्त्य को उद्धृत करते हुए कहा गया है कि रसायन, तप व जप में सिद्ध महान लोग काल मृत्यु को भी जीत लेते हैं, पर आलसी आदमी नहीं (देखें, च.सू.1.62 पर चक्रपाणि.): रसायनतपो जापयोगसिद्धैर्महात्मभि:। कालमृत्युरपि प्राज्ञैर्जीयते नालसैर्नरै:।। तीसरा प्रमाण महर्षि-वैज्ञानिकआचार्य चरक द्वारा सोसायटल कोलैप्स या जनपदोध्वंश की स्थिति-हवा, पानी, मिट्टी और ऋतुओं के प्रदूषित हो जाने से उत्पन्न महामारियाँ-में पंचकर्म व रसायनों के द्वारा समस्या निवारण हेतु सुझाया गया रास्ता है (देखें, च.वि.3.13-14): येषां न मृत्युसामान्यं सामान्यं न च कर्मणाम्। कर्म पञ्चिवधं तेषां भेषजं परमुच्यते।। रसायनानां विधिवच्चोपयोग: शस्यते। शस्यते देहवृत्तिश्च भेषजै: पूर्वमुद्धतै:।। रसायन द्रव्यों के साथ ही अद्रव्य रसायन भी हैं जो सत्त्वावजय और दैव-व्यपाश्रय चिकित्सा में मददगार हैं। उदाहरण के लिये दान, विनम्रता, दया, सत्य, ब्रह्मचर्य, कृतज्ञता, मित्रता, रसायन व अच्छे कार्य सब उम्रवर्धक हैं (अ.हृ.शा.3.120): दानशीलदयासत्य ब्रह्मचर्यकृतज्ञता:। रसायनानि मैत्री च पुण्यायुर्वृद्धिकृद्गण:।।

> **आयुर्वेद के रसायन बढ़ती उम्र के लोगों में डी.एन.ए. रिपेयर मैकेनिज्म की गति को बढ़ा सकते हैं? इस विषय में कई अध्ययनों से यह सिद्ध होता है कि रसायन औषधियाँ डी.एन.ए. रिपेयर की गति को बढ़ाकर बुढ़ापा आने की गति को धीमा कर देती हैं। हाल में हुये एक क्लीनिकल ट्रायल में पाया गया कि आमलकी रसायन के प्रयोग से डी.एन.ए.स्ट्रैंड में तोड़फोड़ की गति कम होती है तथा रिपेयर मैकेनिज्म तेज हो जाती है। यह रसायन सुरक्षित भी पाया गया है।**

संहिताओं के साथ ही आधुनिक वैज्ञानिक अध्ययनों से भी रसायनों की क्रियात्मकता के ठोस प्रमाण मिल रहे हैं। मेरे ज्ञान में रसायन योगों पर 2100 शोधपत्र और एकल रसायनों पर कम से कम 5000 शोधपत्रों में से एक भी ऐसा नहीं है जिसमें रसायनों की त्रिदोष-नियामकता पर ठोस प्रश्नचिन्ह लगाया हो। आइये कुछ उदाहरण देखते हैं।

उम्र-आधारित रोगजनन का एक प्रमुख कारण डी.एन.ए. रिपेयर मैकेनिज्म में गड़बड़ी होना माना जाता है। जीवित कोशिकाओं के गुणसूत्रों में पाये जाने वाले तंतुनुमा अणु को डीऑक्सीराइबोन्यूक्लिक एसिड या डी.एन.ए.कहा जाता है। इसी में अनुवांशिक कोड निहित रहता है। जैसे जैसे डी.एन.ए. डैमेज का बोझ बढ़ता जाता है, शरीर बुढ़ापे की ओर बढ़ता जाता है। इस कारण अनेक समस्यायें जैसे कैंसर, न्येरोडीजेनरेशन और बढ़ती उम्र के कारण होने वाली अनेक व्याधियां विकसित हो जाती हैं। शरीर की कोशिकाओं द्वारा डी.एन.ए. डैमेज के संकेत प्राप्त करना और टूट-फूट की मरम्मत करने की क्षमता उम्र के साथ घटती जाती है। इसीलिये बढ़ती उम्र में अनेक रोग लग जाते हैं।

तो क्या आयुर्वेद के रसायन बढ़ती उम्र के लोगों में डी.एन.ए. रिपेयर मैकेनिज्म की गति को बढ़ा सकते हैं? इस विषय में कई अध्ययनों से यह सिद्ध होता है कि रसायन औषधियाँ डी.एन.ए. रिपेयर की गति को बढ़ाकर बुढ़ापा आने की गति को धीमा कर देती हैं। हाल में हुये एक क्लीनिकल ट्रायल में पाया गया कि आमलकी रसायन के प्रयोग से डी.एन.ए.स्ट्रैंड में तोड़फोड़ की गति कम होती है तथा रिपेयर मैकेनिज्म तेज हो जाती है। यह रसायन सुरक्षित भी पाया गया है। एक अन्य अध्ययन में, जो 45-60 वर्ष के लोगों के मध्य किया गया, पाया गया है कि आमलकी रसायन का प्रयोग रक्त की परिफेरल ब्लड मोनोन्यूलियर सेल्स में टीलोमीयर की लम्बाई में बदलाव किये बिना टीलोमेरेज क्रियात्मकता को बढ़ा देता है। इससे चूंकि टीलोमियर के क्षरण में कमी आती है, अत: हैल्थस्पान में बेहतरी होती है। एक तीसरा उदाहरण अश्वगंधाा का दिया जा सकता है। कुल 50 स्वस्थ खिलाड़ियों के मध्य किये गये क्लीनिकल ट्रायल में यह पाया गया है कि अश्वगंधा की जड़ों का एक्सट्रैक्टकार्डियोरेस्पायरेटरी सहनशीलता को बढ़ा देता है। इसके अलावा अनेक इनवाइट्रो, इन वाईवो और क्लिनिकल अध्ययन में अश्वगंधा और आमलकी सहित तमाम रसायनों द्वारा कैंसर, मधुमेह, कार्डियोवैस्कुलर बीमारियाँ, मानसिक बीमारियों तथा अपर-रेस्पायरेटरी-ट्रैक्टसंक्रमण से बचाव होता है। एक प्रमाण-आधारित तथ्य यह भी है कि आयुर्वेद के रसायनों से बेहतर एंटी-एंग्जाइटी व वाजीकर से बेहतर एंटी-डिप्रेशेंट औषधि कोई नहीं है। बुढ़ापा आने का एक कारण ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस और इनफ्लेमेशन का बढ़ना भी है। रसायन द्रव्यों के उपयोग करते रहने से शरीर का व्याधिक्षमत्व बढ़ता है तथा ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस और इनफ्लेमेशन में कमी होती है।

उत्तम बात यह है कि कुछ ऐसे द्रव्य हैं जो आहार, रसायन और औषधि, तीनों ही प्रकारों में वर्गीकृत हैं। फल व सूखे मेवे, खजूर, द्राक्षा, मुनक्का, बादाम, तिल, आँवला, लहसुन, सोंठ, कालीमिर्च, पिपली, हल्दी, केसर, जीरा, धनिया, मूंग, जल, दूध, घी, तुलसी, शहद, गुड़, त्रिकटु एवं त्रिफला आदि ऐसे द्रव्य हैं जिनके युक्तिपूर्वक सेवन के लिये किसी क्लिनिकल ट्रायल का इंतज़ार करने की आवश्यकता नहीं है। संहिता, साइंस और अनुभव सब इन द्रव्यों के पक्ष में हैं।

मृत्यु की तिथि तय नहीं है, अपितु प्राणियों की आयु युक्ति की अपेक्षा रखती है (च.वि. 3.29: भूतानामायुर्युक्तिमपेक्षते। युक्ति से उम्र बढ़ सकती है। असल में युक्तिव्यपाश्रय आचार्य चरक द्वारा आयुर्वेदाचार्यों पर किये गये विश्वास की पराकाष्ठा है। चिकित्सा में सफलता युक्ति पर निर्भर है (च.सू. 2.16): सिद्धिर्युक्तौ प्रतिष्ठिता। जब सफलता युक्ति पर आश्रित हो तो साध्य-असाध्य या अरिष्ट की जाँच-परख से ज्यादा महत्त्व युक्ति के प्रयोग पर दिया जाना चाहिये। और इस युक्ति में रसायन महत्वपूर्ण भूमिका रखते हैं। इसलिये मेरा मानना है कि आयुर्वेदाचार्यों की देखरेख में लिये जाने वाले रसायन मौत के मुंह से निकाल लाने की क्षमता रखते हैं। रसायनों की क्षमताओं को पहचानिये। रसायन जरा-व्याधि का नाश तो करते ही हैं, जीवन का नाश भी रोक सकते हैं।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय,
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त; वर्तमान में अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंगप्रोफेसर)

(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

मौसम की मार से प्याज-टमाटर सहित कई सब्जियों के भाव बढ़े

प्याज-टमाटर ही नहीं आलू भी कर रहा आम आदमी की जेब ढीली

- हरी सब्जियां आम आदमी की थाली से दूर होती जा रही है
- सब्जियों के दाम में बढ़ोतरी से महिलाओं की रसोई का बजट बिगड़ा

मौसम की मार से सब्जियों के दामों बढ़ोतरी होने लगी है।

अजमेर, (कासं)। प्रदेश में मानसून का आगमन हो चुका है, ऐसे में प्याज-टमाटर समेत कई सब्जियों के भाव आसमान छू रहे हैं। मंडी से लेकर खुदरा बाजार तक के दाम में बड़ा असर देखने को मिल रहा है। इस महंगाई की रेस में आलू भी पीछे नहीं है। आलू का दाम 32 से 35 पहुंच गया है। बारिश के कारण किसानों की फसल प्रभावित हुई है। सब्जियों के दामों में भारी उछाल के चलते आम जनता के लिए बड़ी चिंता का विषय बन गई हैं। प्याज-टमाटर ही नहीं अब आलू भी आम आदमी की जेब ढीली कर रहा है, सब्जियों के भाव बढ़ने से अब वे आम आदमी की थाली से हरी सब्जियां दूर होती जा रही हैं।

टमाटर के साथ आलू की कीमते चर्चा में:-मानसून के साथ ही प्याज-टमाटर सहित सब्जियों के भाव आसमान छू रहे हैं। इस बार टमाटर की कीमतें सबसे ज्यादा चर्चा में हैं। बाजार में टमाटर का भाव 80 रुपए तो वहीं प्याज की 50 रुपए प्रति किलो मिल रही है, इसके साथ ही आलू जो हर परिवार की थाली का मुख्य हिस्सा होता है, आलू के दाम 40 रुपए प्रति किलो पहुंचने के साथ ही सब्जियों के दाम में बढ़ोत्तरी से महिलाओं की रसोई का बजट बिगड़ गया है। आम आदमी के लिए 40 रुपए प्रति किलो कीमत पर आलू खरीदना भी मुश्किल हो गया है। वहीं हरी सब्जियों के दामों में भी भारी बढ़ोतरी देखी जा रही है, गंवार फली 160 रुपए प्रति किलो और भिंडी 50 रुपए प्रति किलो, बैंगन 80 रुपए, फूल गोभी 80 रुपए, टिंडे 100 रुपए, तुरई 80 रुपए पहुंच गई है।

दाम बढते से घरेलू बजट पर असर:-सब्जी की कीमतों में बढ़ोतरी से आम उपभोक्ता के बजट से बाहर होने से घरेलू बजट बिगड़ रहा है। किसानों और व्यापारियों का कहना है कि मानसून के कारण सब्जियों की फसल को नुकसान पहुंचा है जिससे उनकी आपूर्ति में कमी आई है। इसके साथ ही परिवहन और भंडारण की लागत भी बढ़ गई है जो कीमतों में वृद्धि का एक अन्य कारण है। इस महंगाई के चलते आम आदमी की परेशानी बढ़ गई है। महिलाओं को घर के बजट में संतुलन बनाना मुश्किल हो रहा है।

मौसम की मार:-पानी लगने की वजह से प्याज अब दागी हो रहा है, जिससे किसानों को ट्रालियां तक यूं ही फैंकनी पड़ रही है। दूसरी ओर आलू की बात करें तो अब की बार पैदावार कम हुई है जिसके चलते दाम बढ़ रहे हैं। दूसरी ओर मंडी में की जाने वाली खरीद और खुदरा बाजार के दाम में भी अंतर होने के कारण आमजन काफी प्रभावित है। दरअसल, बदले हुए मौसम की वजह से सिर्फ टमाटर, आलू प्याज ही महंगा नहीं बिक रहा है, अन्य सब्जियों की कीमत भी आसमान छूने लगी है। ऐसे में मंडी में खरीद के लिए पहुंचने वाले लोग दाम पूछने के बाद खरीद से पीछे हट रहे हैं, क्योंकि व्यवस्था के स्तर पर खरीद बजट से बाहर हो रही है।

शिक्षा का मानवता, देश और समाज के कल्याण के लिए अधिकाधिक उपयोग हो : राज्यपाल

- राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय कोटा का 13वां दीक्षांत समारोह आयोजित

कोटा में राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में राज्यपाल ने उपाधियां प्रदान की।

कोटा, (निसं)। राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय कोटा का 13वां दीक्षांत समारोह आयोजित हुआ। समारोह की अध्यक्षता राज्यपाल एवं कुलाधिपति कलराज मिश्र ने की तथा सम्मानित अतिथि के रूप में अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद के सभापति प्रोफेसर टीजी सीताराम उपस्थित थे।

इस अवसर पर राज्यपाल मिश्र ने संविधान के मूल कर्तव्यों का वाचन कर समारोह की शुरुआत की एवं उन्होंने 127 विद्यार्थियों को डिग्रीयां एवं 44 स्वर्ण पदक प्रदान किए एवं दीक्षांत समारोह के सफल आयोजन के लिए विश्वविद्यालय और सभी पदक प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को बधाई व उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं प्रदान की। कुलसचिव धीरज सोनी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

समारोह को संबोधित करते हुए राज्यपाल एवं कुलाधिपति कलराज मिश्र ने कहा कि दीक्षांत शिक्षा का अंत नहीं बल्कि नए जीवन का आरम्भ है। यह वह समय है जब आप विश्वविद्यालय में अर्जित ज्ञान का उपयोग राष्ट्र और समाज के उत्थान में करने के लिए सक्षम होते हैं। विद्यार्थियों नें जो शिक्षा विश्वविद्यालय में प्राप्त की है, उसका मानवता के कल्याण के लिए, देश और समाज के लिए अधिकाधिक उपयोग किया जाना चाहिए। विश्वविद्यालयों में संविधान उद्यान निर्मित कराने की मंशा यही है कि हम संविधान की उदात्त परम्पराओं से सदा जुड़े रहें। राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय, कोटा अपनी स्थापना के बाद से ही देश में शिक्षा के प्रसार में महती भूमिका निभा रहा है। तकनीकी शिक्षा मानव संसाधन विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

इसके लिए हमें विश्वविद्यालयों को इस तरह से तैयार करने की जरूरत है कि वहां नित्य नवीन ज्ञान का प्रसार हो ताकि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोग से भारत को फिर से विश्वगुरु बन सके। विगत वर्षों में विश्वविद्यालय द्वारा युवाओं को देश-विदेश में गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा प्राप्त करने के समान अवसर प्रदान किए हैं।

राज्यपाल एवं कुलाधिपति कलराज मिश्र ने कहा कि देश की जो नई शिक्षा नीति बनी है, उसका मूल भी यही है कि भारत आत्मनिर्भर हो। इसीलिए शिक्षा नीति में युवाओं को कौशल विकास से जोड़े जाने पर विशेष जोर दिया गया है। विश्वविद्यालयों गुणवत्ता और नवाचार पर लगातार ध्यान केंद्रित करना होगा। नई शिक्षा नीति का उद्देश्य 21वीं सदी की जरूरतों एवं चुनौतियों को ध्यान में रखकर स्कूल और कॉलेज की शिक्षा को अधिक समग्र बनाते हुए भारत को एक ज्ञान आधारित जीवंत समाज और ज्ञान की वैश्विक महाशक्ति में बदलना है।

समारोह में राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय, कोटा के विभिन्न सम्बद्ध महाविद्यालयों के निदेशक, प्राचार्य, विश्वविद्यालय प्रबन्ध मण्डल एवं विद्या परिषद के सदस्य, अन्य विश्वविद्यालयों के कुलपति, राजभवन से अधिकारीं, विश्वविद्यालय के समस्त अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, कार्यालयाध्यक्ष, कुलसचिव, समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी, संकाय सदस्य, शिक्षक, शिक्षाविद्, विद्यार्थी व उनके अभिभावक, प्रशासनिक अधिकारी, गणमान्य नागरिक एवं आमंत्रित विशिष्ठ अतिथिगणों ने शिरकत की।

सरकारी स्कूलों में लगे प्रबोधक का होगा प्रमोशन

बीकानेर, (निसं)। प्रारंभिक शिक्षा के अधीन कार्यरत 2449 प्रबोधकों को जल्दी ही वरिष्ठ प्रबोधक पदों पर पदोन्नत करने की तैयारी शिक्षा विभाग ने कर ली है। प्रारंभिक शिक्षा निदेशालय ने सभी जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारंभिक शिक्षा, मुख्यालय) को उनके जिले में पदोन्नति के पात्र प्रबोधकों की संख्या भेजते हुए उनकी अस्थाई वरिष्ठता सूची 10 जुलाई तक अद्यतन करने के निर्देश दिए हैं।

इस अस्थाई सूची पर 3 दिवस में संबंधित प्रबोधकों से आपत्तियां मांगने के बाद 15 जुलाई तक स्थाई वरीयता सूची जारी कर दी जाएगी। 20 जुलाई तक चयन संबंधी कार्यवाही पूरी कर चयन आदेश की हार्ड और सॉफ्ट कॉपी 22 जुलाई तक प्रारंभिक शिक्षा निदेशालय को वाहक स्तर पर भेजने के निर्देश दिए गए हैं।

पूरे राज्य में कुल 10392 प्रबोधक वरिष्ठ प्रबोधक पदों पर पदोन्नति के पात्र हैं, जिसमे से वर्ष 2021 में पदोन्नत करने के लिए 5 हजार पद स्वीकृत किए गए थे। शेष रहे 5392 में से अब 2449 पदों पर पदोन्नति की स्वीकृति सरकार ने दी है। जिन नवगठित जिलों में जिला स्थापना समिति का गठन नहीं हुआ है, उन जिलों में पूर्व 33 जिलों के अनुसार ही वरिष्ठता निर्धारित की जाएगी। जिले में कुल 254 प्रबोधक पदोन्नति के पात्र थे, जिसमें से 122 को वरिष्ठ प्रबोधक पदों पर पदोन्नत किया जा चुका है। शेष 132 प्रबोधकों में से 60 प्रबोधकों को वरिष्ठता के आधार इस बार पदोन्नत किया जाएगा।

राशिफल रविवार 7 जुलाई, 2024

पंडित अनिल शर्मा

आषाढ़ मास, शुकल पक्ष, द्वितीया तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2081, पुष्य नक्षत्र सोमवार प्रात: 6:03 तक, हर्षण योग रात्रि 2:12 तक, बालव करण सांय 4:43 तक, चन्द्रमा आज कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-मेष, बुध-कर्क, गुरू-वृष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज राजयोग और रविपुष्य योग सूर्योदय से सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। आज शुक्र उदय पश्चिम रात्रि 9:05 पर होगा। आज चन्द्र दर्शन, उत्तर श्रृंगोन्नति, मनोरथ द्वितीया व्रत, आषाढ़ी दशहरा और रथयात्रा उत्सव है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 7:24 से 9:07 तक, लाभ-अमृत 9:07 से 12:21 तक, शुभ 2:13 से 3:56 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 5:42, सूर्यास्त 7:20

मेष

घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृष

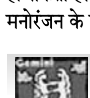

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज नये-पुराने मित्रों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

मिथुन

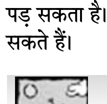

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आवश्यक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

कर्क

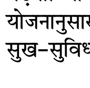

मन:स्थिति ठीक रहेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी।

सिंह

अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। अनावश्यक धन खर्च होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कन्या

आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में प्रगति होगी। आवश्यक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

तुला

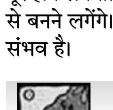

आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आवश्यक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

वृश्चिक

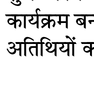

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

धनु

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

मकर

परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। घर-परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ

घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।

मीन

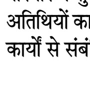

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।